प्राचीन यूनान की आर्थिक दशा

Mandip kumar Chaurasiya

Assistant Professor(Guest)

Dept. of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

B.A. – III Year

Paper – VII (Ancient Civilizations (Down to 600 B.C.)

प्राचीन विश्व की सभ्यताओं में यूनानियों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यूनानियों की आर्थिक दशा विश्व की अन्य समकालीन सभ्यताओं से समृद्ध थी। यूनानियों का मुख्य व्यवसाय कृषि तथा पशुपालन था। यहाँ की मुख्य उपज गेहू, जौ, अजीर और जैतून आदि थी। यहाँ के निवासी भेड, बकरी, गाय और घोडे आदि जानवरों को पालते थे। उधोग धंधो के क्षेत्र में यूनानी लोग अधिक उन्नति नही कर सके थे लेकिन बाद में इन्होने प्रगति की। यहाँ के लोग मिट्टी के बर्तन, अस्त्र-शस्त्र और फर्नीचर आदि बनाते थे। जैतून से तेल बनाते थे और अंगुर से शराब बनाते थे। इसके अतिरिक्त यहाँ लकडी की नावें भी बनाई जाती थी।

यूनान में व्यापार के क्षेत्र में काफी विकास हुआ। इसका कारण यह था कि एक तो उसकी जहाज-रानी व्यवस्था सुदृढ़ थी और दूसरा उन्होंने अपने बहुत से उपनिवेश स्थापित किये थे, जिससे व्यापार के क्षेत्र में

काफी उन्नति हुई। यूनान के मिश्र, मैसोपोटामिया, स्पेन, फ्रांस और इटली आदि देशो के साथ व्यापारिक सम्बन्ध थे। यहाँ के व्यापारी मिश्र और मेसोपोटामिया से खाद्य सामग्री और रेशम का कपडा आदि वस्तुएँ आयात करते थे, तथा पूर्वी देशो से बढिया वस्त्र, मिर्च मसालें और सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्री का आयात करते थे। इसके बदले में यनानी व्यापारी मिट्टी के बर्तन, शरात, जैतून का तेल, लकडी का फर्नीचर प्रादि वस्तुएं निर्यात करते थे। यूनान से अधिकाश व्यापार विदेशी नागरिक ही करते थे। उस समय प्रत्येक नगर, राज्य की राजधानी एक बडी व्यापारिक मंडी हुवा करती थी। विदेशी व्यापार से यूनान के राज्यों की आय में काफी वृद्धि हुई । यूनान में मुद्रा प्रणाली प्राधिकार और बैंक प्रथा के प्रचलन से भी व्यापार को काफी प्रोत्साहन मिला। अपोलो का मन्दिर जो यूनान का एक प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय बैंक था। उस समय के व्यापारी इस मन्दिर से ब्याज पर ऋण लेकर व्यापार करते थे। यूनान में जीविकोपार्जन की समस्या नही थी और आर्थिक दृष्टि से काफी समृद्ध और सम्पन्न था। यूनान के समृद्ध व हानि के कारण यहाँ सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत अधिक विकास हुआ।

ग्रामीण सभ्यता होने के कारण लोगों की जीविका के मुख्य साधन कृषि एवं पशु-पालन ही थे। संपत्ति का मूल्यांकन पशुओं की संख्या से होता था। इस दृष्टि से भी यह सभ्यता ऋग्वैदिक काल की सभ्यता से मिलती-जुलती है। ऋग्वैदिक काल में भी आर्यों की संपत्ति का अनुमान गायों की संख्या से होता था तथा किसी वस्तु का मूल्य गायों के द्वारा निर्धारित किया जाता था इसी प्रकार होमरयुगीन सभ्यता में बैलों के माध्यम से वस्तुओं का मूल्य निर्धारित होता था। सीमित रूप से

आदान-प्रदान के द्वारा ही वाणिज्य भी होता था। वास्तव में, प्रत्येक गाँव में सभी आवश्यक सामग्रियाँ पैदा कर ली जाती थीं, जिससे बड़े पैमाने पर व्यापार की आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। विभिन्न प्रकार के कुटीर उद्योगों के द्वारा दैनिक जीवन की वस्तुएँ बना ली जाती थीं। गाँवों में तलवार बनाने वाले, सोनार, कुम्हार आदि सम्मानित दृष्टि से देखे जाते थे। स्वावलंबन की प्रथा इतनी अधिक थी कि प्रायः प्रत्येक परिवार अपनी खाद्य सामग्री, अपने पहनने के वस्त्र एवं हथियारों और औजारों को बनाने था। पशुओं में गाय, बैल, भेंड़, बकरी, सुअर तथा घोड़े आदि पाले जाते थे।

चाहे जो कुछ हो यूनान की सभ्यता एक समृद्धशाली सभ्यता थी। यूनानियों ने हरेक क्षेत्र में अपने ज्ञान कौशल का परचम लहराया। इन्होने अपने आर्थिक प्रगति से यूनान को एक समृद्धशाली अर्थव्यवस्था बनाया। क्योकि इनके यहाँ अनेक विश्व ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक तथा दार्शनिक हुए। जिससे इनकी आर्थिक दशा मजबूत हुई।